UGC NET Paper=2.... Sanskrit

Filler Form

YouTube

🎯JRF का जलवा 🔥🏆

दर्शन - साहित्य का विशिष्ट अध्ययन

UNIT=4

Daily = 6 pm

Class-31

By=NIDHU CHAUDHARY

B.A., M.A., P.G.D.C.A., now Ph.d running

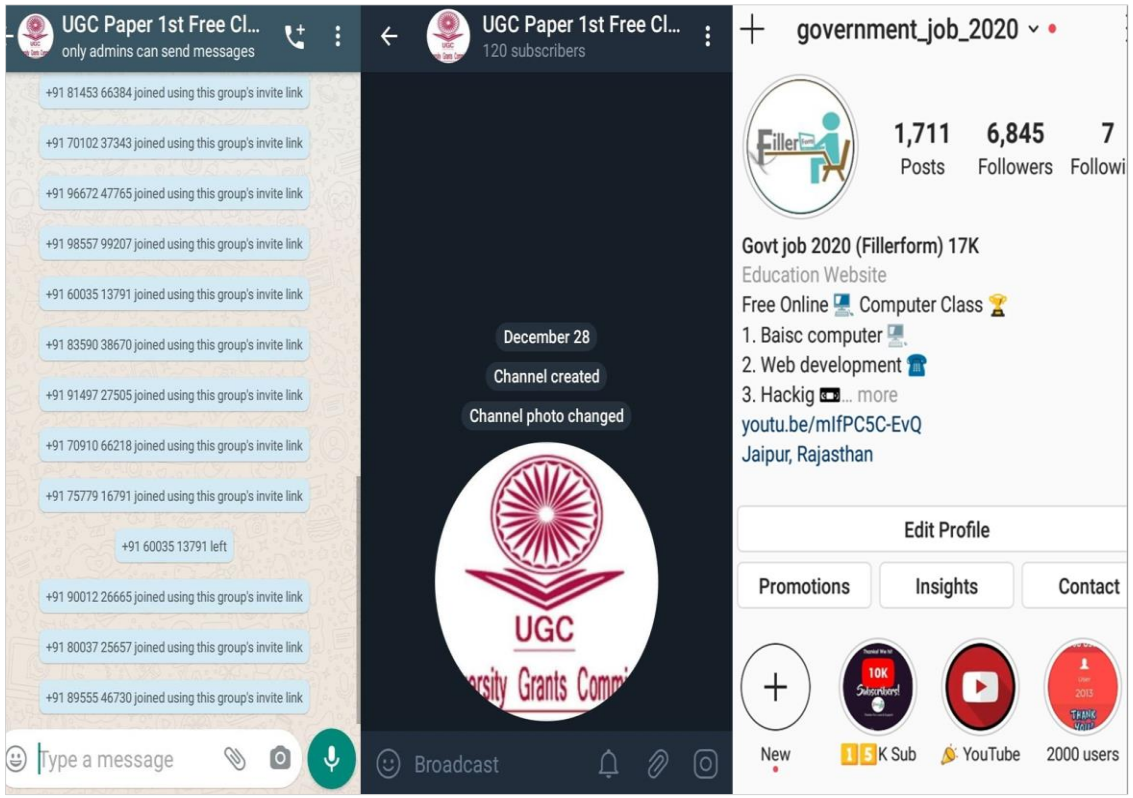
UGC Paper 1st Free Cl...
only admins can send messages
+91 81453 66384 joined using this group's invite link
+91 70102 37343 joined using this group's invite link
+91 96672 47765 joined using this group's invite link
+91 98557 99207 joined using this group's invite link
+91 60035 13791 joined using this group's invite link
+91 83590 38670 joined using this group's invite link
+91 91497 27505 joined using this group's invite link
+91 70910 66218 joined using this group's invite link
+91 75779 16791 joined using this group's invite link
+91 60035 13791 left
+91 90012 26665 joined using this group's invite link
+91 80037 25657 joined using this group's invite link
+91 89555 46730 joined using this group's invite link
Type a message
UGC Paper 1st Free Cl...
120 subscribers
December 28
Channel created
Channel photo changed
UGC
Broadcast
government_job_2020
1,711 Posts
6,845 Followers
7 Followi
Govt job 2020 (Fillerform) 17K
Education Website
Free Online Computer Class
1. Baisc computer
2. Web development
3. Hackig... more
youtu.be/mIfPC5C-EvQ
Jaipur, Rajasthan
Edit Profile
Promotions
Insights
Contact
New
19K Sub
YouTube
2000 users

Filler Form
LATEST UPLOADS
UGC NET Paper 1st
Teaching Aptitude
"Level of Teaching"
11:00 AM Level Of Teaching | Teaching
11:00 AM Level Of Teaching | Teaching Aptitude By Jitendra Goswami | NET
LEARNING MATERIAL
Quizzes
Notes
Sample Papers
UGC NET 100%
Off Free Class
Free Notes
Live Class
100% OFF
5000+MCQ+PYQ
Free Books
fillerform

UGC Paper 1st Free Cl...
only admins can send messages

+91 81453 66384 joined using this group's invite link

+91 70102 37343 joined using this group's invite link

+91 96672 47765 joined using this group's invite link

+91 98557 99207 joined using this group's invite link

+91 60035 13791 joined using this group's invite link

+91 83590 38670 joined using this group's invite link

+91 91497 27505 joined using this group's invite link

+91 70910 66218 joined using this group's invite link

+91 75779 16791 joined using this group's invite link

+91 60035 13791 left

+91 90012 26665 joined using this group's invite link

+91 80037 25657 joined using this group's invite link

+91 89555 46730 joined using this group's invite link

Type a message

UGC Paper 1st Free Cl...
120 subscribers

December 28

Channel created

Channel photo changed

Broadcast

government_job_2020

1,711 Posts

6,845 Followers

7 Followi

Govt job 2020 (Fillerform) 17K

Education Website

Free Online Computer Class

1. Baisc computer

2. Web development

3. Hackig ... more

youtu.be/mIfPC5C-EvQ

Jaipur, Rajasthan

Edit Profile

Promotions | Insights | Contact

New

15K Sub

YouTube

2000 users

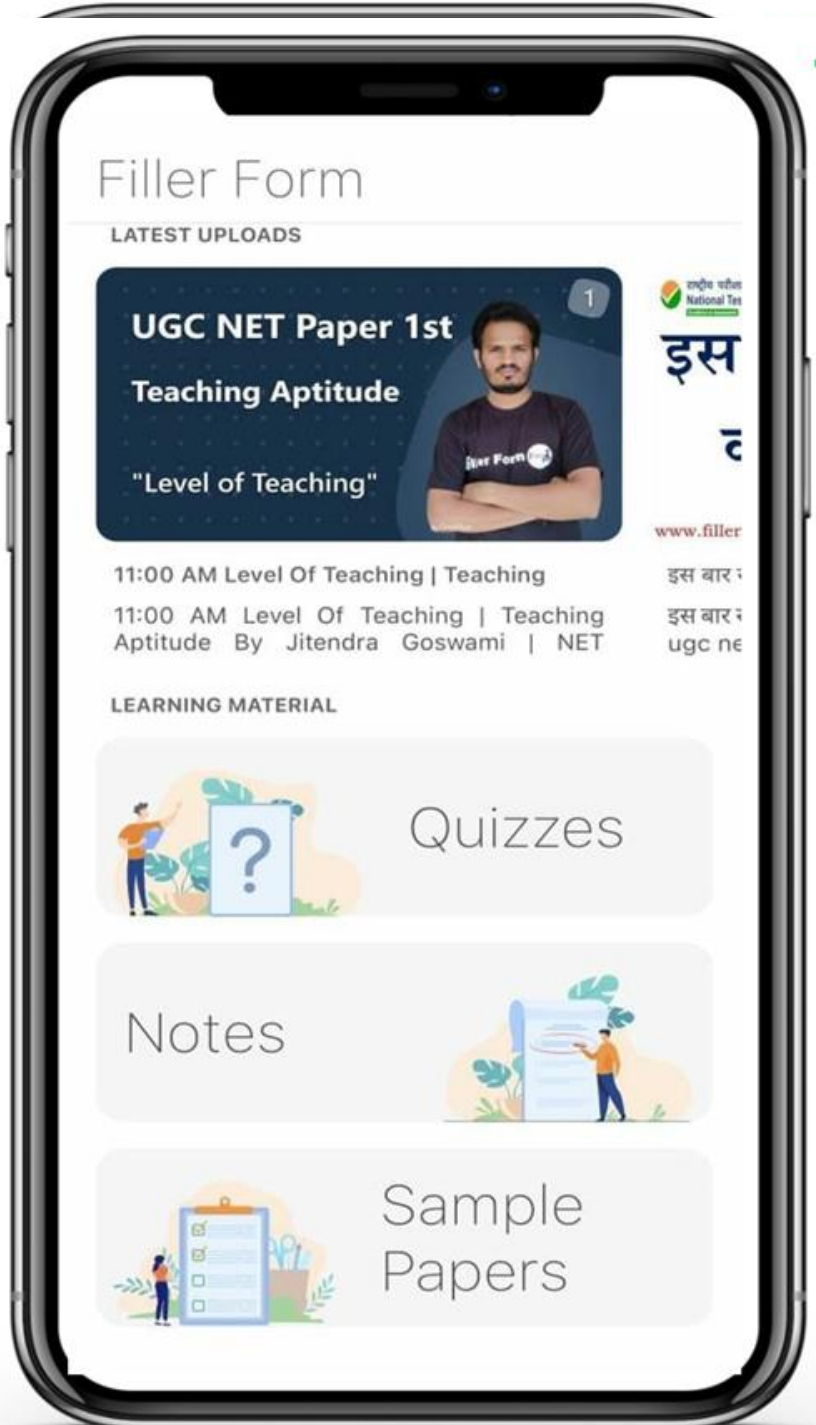

UGC NET 100% Off Free Class

Free Notes

Live Class

100% OFF

5000+MCQ+PYQ

Free Books

fillerform

Home work Answer.....

3. तर्कसङ्ग्रहानुसारं' कति गुणाः सन्ति -

(A) सप्तदश (B) अष्टचत्वारिंशत्

(C) चतुर्विंशतिः (D) दश

4. उत्क्षेपणं' कस्य प्रकारः -

(A) गमनस्य (B) भ्रमणस्य

(C) कर्मणः (D) करणस्य

Today's Topic...

गुण:

रुपम्
रसः
गन्धः
स्पर्शः
संख्या
परिमाणम्
पृथक्तम्
संयोगः
विभागः
परत्वापरत्वम्
गुरुत्वम्
द्रवत्वम्
स्नेहः
शब्दः
बुद्धिः
स्मृतिः
यथार्थानुभवः
अयथार्थः
करणम्
कारणम्
कार्यम्

8209837844

w.ugc-net.com

॥गुणाः॥

रुपम्-

'चक्षुर्मात्रग्राह्यो गुणो रूपम्' ।

तच्च शुक्लनीलपीतरक्तहरितकपिशचित्रभेदात्सप्तविधम् । पृथिवीजलतेजोवृत्ति । तत्र पृथिव्यां सप्तविधम् । अभास्वरशुक्लं जले । भास्वरशुक्लं तेजसि ।

अर्थ- केवल चक्षु-इन्द्रिय से ग्रहण किये जाने वाले गुण को रुप कहते है । वह शुक्ल (सफ़ेद), नील (काला और नीला), पीत (पीला), रक्त (लाल), हरित (हरा), कपिश (भूरा), चित्र (अनेक रुपों का मिलन) के भेद से सात प्रकार का है । रुप पृथिवी, जल, तेज इन तीनों मे ही रहता है। उनमें पृथ्वी में सात प्रकार का रुप रहता है । अभास्वर शुक्ल जल में और भास्वरशुक्ल तेज में रहता है ।

82098 net.com

रसः-

'रसनग्राह्यो गुणो रसः' । स च मधुराम्ललवणकटुकषायतिक्तभेदात् षड्विधः । पृथिवीजलवृत्तिः । तत्र पृथिव्यां षड्विधः। जले मधुर एव ।

अर्थ- रसनेन्द्रिय से ग्रहण किये जाने वाले गुण को रस कहते है। वह रस मधु (मीठा), अम्ल (खट्टा), लवण (नमकीन), कटु (कडुवा), कषाय (कसैला), तिक्त (तीखा) के भेद से छह प्रकार का होता है । वह रस केवल पृथ्वी और जल में ही रहता है उसमें भी पृथ्वी में छहों प्रकार के रस रहते है । जल में तो केवल मधुर रस ही रहता है ।

8209837844
w.ugc-net.com

गन्धः-

'घ्राणग्राह्यो गुणो गन्धः' । स द्विविधः सुरभिरसुरभिश्च । पृथिवीमात्रवृत्तिः।

स्पर्शः-

'त्वगिन्द्रियमात्रग्राह्यो गुणः स्पर्शः' । स च त्रिविधः शीतोष्णानुष्णाशीतभेदात् । पृथिव्यप्तेजोवायुवृत्तिः । तत्र शीतो जले । उष्णस्तेजसि । अनुष्णाशीतः पृथिवीवाय्वोः । रूपादिचतुष्टयं पृथिव्यां पाकजमनित्यं च । अन्यत्र अपाकजं नित्यमनित्यं च । नित्यगतं नित्यम् । अनित्यगतमनित्यम् ।

संख्या-

'एकत्वादिव्यवहारहेतुः संख्या' । सा नवद्रव्यवृत्तिः एकत्वादिपरार्धपर्यन्ता । एकत्वं नित्यमनित्यं च । नित्यगतं नित्यम् । अनित्यगतमनित्यम् । द्वित्वादिकं तु सर्वत्राऽनित्यमेव ॥

8209837844 v.ugc-net.com

परिमाणम्-

'मानव्यवहारासाधारणकारणं परिमाणम्' । नवद्रव्यवृत्तिः । तच्चतुर्विधम् । अणु महद्दीर्घं ह्रस्वं चेति ।

पृथक्त्वम्-

'पृथग्व्यवहारासाधारणकारणं पृथक्त्वम्' । सर्वद्रव्यवृत्तिः ।

संयोगः-

'संयुक्तव्यवहारहेतुः संयोगः' । सर्वद्रव्यवृत्तिः ।

विभागः-

'संयोगनाशको गुणो विभागः' । सर्वद्रव्यवृत्तिः ।

8209831 c-net.com

परत्वापरत्वम्-

'परापरव्यवहारासाधारणकारणे परत्वापरत्वे' । पृथिव्यादिचतुष्टय मनोवृत्तिनी । ते द्विविधे दिक्कृते कालकृते च । दूरस्ते दिक्कृतं परत्वम् । समीपस्थे दिक्कृतमपरत्वम् । ज्येष्ठे कालकृतं परत्वम् । कनिष्ठे कालकृतमपरत्वम् ॥

गुरुत्वम्-

'आद्यपतनासमवायिकारणं गुरुत्वम्' । पृथिवीजलवृत्ति ॥

अर्थ- आद्य (प्रथम) पतन के असमवायिकारण गुण को गुरुत्व कहते है । वह पृथ्वी और जल में रहता है ।

8209837

gc-net.com

द्रवत्वम्-

'आद्यस्यन्दनासमवायिकारणं द्रवत्वम्' । पृथिव्यप्तेजोवृत्ति । तद्विविधं सांसिद्धिकं नैमित्तिकं च । सांसिद्धिकं जले । नैमित्तिकं पृथिवीतेजसोः । पृथिव्यां घृतादावग्नि संयोगजं द्रवत्वम् । तेजसि सुवर्णादौ ॥

अर्थ- आद्य (प्रथम) स्यन्दन (बहने,चूने) के असमवायिकारण गुण को द्रवत्व कहते है । वह पृथ्वी जल और तेज में रहता है। वह द्रवत्व सांसिद्धिक (स्वाभाविक) और नैमित्तिक (कारणजन्य) के भेद से दो प्रकार का है। सांसिद्धिक द्रवत्व केवल जल में रहता है और नैमित्तिक द्रवत्व पृथिवी और तेज में रहता है। पार्थिव घृत् आदि में अग्निसंयोग उत्पन्न द्रवत्व है और तेज में होने वाले द्रवत्व सुवर्ण आदि में देखा जा सकता है।

8209837844

ww.ugc-net.com

स्नेहः-

'चूर्णादिपिण्डीभावहेतुर्गुणः स्नेहः' । जलमात्रवृत्तिः ॥

अर्थ- चूर्ण आदि के पिण्ड बनने में जो कारण गुण है उसे स्नेह कहते है वह केवल जल में ही रहता है ।

शब्दः-

'श्रोत्रग्राह्यो गुणः शब्दः' । आकाशमात्रवृत्तिः । स द्विविधः ध्वन्यात्मकः वर्णात्मकश्च । तत्र ध्वन्यात्मकः भेर्यादौ । वर्णात्मकः संस्कृतभाषादिरूपः॥

अर्थ- (कान के छिद्र में विद्यमान) श्रोत्र इन्द्रिय से ग्रहण किये जाने वाले गुण को शब्द कहते है। वह केवल आकाश में ही रहता है। वह ध्वन्यात्मक (ध्वनिरुप) और वर्णात्मक (वर्णरुप) के भेद से दो प्रकार का होता है। ध्वन्यात्मक शब्द भेरी आदि के बजाने से उत्पन्न होता है तो वर्णात्मक शब्द संस्कृतभाषा आदि रूप वाला है।

8209837843 ugc-net.com

बुद्धिः-

'सर्वव्यवहारहेतुर्गुणो बुद्धिर्ज्ञानम्' । सा द्विविधा स्मृतिरनुभवश्च ।

अर्थ- सम्पूर्ण व्यवहारों का जो कारण गुण है उसे ज्ञान अथवा बुद्धि कहते है। वह स्मृति और अनुभव के भेद से दो प्रकार की होती है।

स्मृतिः-

'संस्कारमात्रजन्यं ज्ञानं स्मृतिः' । तद्भिन्नं ज्ञानमनुभवः । स द्विविधः यथार्थोऽयथार्थश्च ।

अर्थ- केवल संस्कारमात्र से उत्पन्न ज्ञान को स्मृति कहते है । स्मृति से भिन्न ज्ञान को अनुभव कहते है और वह यथार्थ अनुभव एवं अयथार्थ अनुभव के भेद से दो प्रकार का होता है ।

8209837844 www.ugc-net.com

यथार्थानुभवः-

'तद्वति तत्प्रकारकोऽनुभवो यथार्थः' ।

अर्थ- जिसमें जो है वहां उसी प्रकार का अनुभव होता है तो उसे यथार्थानुभव कहते है ।

यथा- 'रजते इदं रजतमिति ज्ञानम्' । सैव प्रमेत्युच्यते ।

जैसे- रजते अर्थात् चांदी में यह चांदी है इस प्रकार का जो अनुभव होता है उसे यथार्थानुभव कहते है और इसी ज्ञान को प्रमा कहते है।

8209837844 www.ugc-net.com

अयथार्थः-

'तदभाववति तत्प्रकारकोऽनुभवोऽयथार्थः'। यथा- शुक्ताविदं रजतमिति ज्ञानम् । सैव अप्रमेत्युच्यते ॥

अर्थ- जिसमें जो नहीं है वहां उसके होने का जो अनुभव है उसे अयथार्थानुभव कहते है। **जैसे-** शुक्ती में यह रजत है यह ज्ञान और इसी को अप्रमा भी कहते है।

यथार्थानुभवश्चतुर्विधः- प्रत्यक्षानुमित्युपमितिशाब्दभेदात् ।

अर्थ- यथार्थ अनुभव प्रत्यक्ष-अनुमिति-उपमिति और शाब्द के भेद से चार प्रकार का होता है ।

तत्करणमपि चतुर्विधं- प्रत्यक्षानुमानोपमानशाब्दभेदात् ॥

अर्थ- यथार्थ अनुभव के करण भी प्रत्यक्ष-अनुमान-उपमान और शब्द के भेद से चार प्रकार के होते है ।

8209837844 www.ugc-net.com

करणम्-

'असाधारणं कारणं करणम्'।

अर्थ- असाधारण कारण को करण कहते है ।

कारणम्-

'कार्यनियतपूर्ववृत्ति कारणम्' ।

अर्थ- कार्य (उत्पन्न होने वाले पदार्थ) से जो निश्चित रुप से पूर्वकाल में विद्यमान हो उसे कारण कहते है।

8209837844 www.ugc-net.com

कार्यम्-

'कार्यं प्रागभावप्रतियोगि' ।

अर्थ- प्रागभाव के प्रतियोगी को कार्य कहते है। कार्य की उत्पत्ति से पहले रहने वाले अभाव को प्रागभाव कहते है और प्रागभाव के प्रतियोगी को कार्य कहां जायेगा ।

कारणं त्रिविधं- समवाय्यसमवायिनिमित्तभेदात् ।

अर्थ- कारण समवायिकारण- असमवायिकारण- निमित्तकारण के भेद से तीन प्रकार का होता है।

8209837844 www.ugc-net.com

1. समवायिकारणम्-

'यत्समवेतं कार्यमुत्पद्यते तत्समवायिकारणम्'। **यथा-** तन्तवः पटस्य पटश्च स्वगतरूपादेः ।

अर्थ- जिसमें समवाय सम्बन्ध से रहकर कार्य उत्पन्न होता है उसे समवायिकारण कहते है। **जैसे-** तन्तु (धागे) पट (वस्त्र) के प्रति समवायिकारण है। इसी तरह पट जो है वह पट के रुप के प्रति समवायिकारण है ।

तन्तु (समवायिकारण) ⟶ पट(समवायिकारण) ⟶ पटरूप

8209837844 www.ugc-net.com

2. असमवायिकारणम्-

'कार्येण कारणेन वा सहैकस्मिन्नर्थे समवेतत्वे सति यत्कारणं तदसमवायिकारणम्' । **यथा-** 'तन्तुसंयोगः पटस्य, तन्तुरूपं पटरूपस्य'। **अर्थ-** 'कार्य' अथवा 'कारण' के साथ एक पदार्थ में समवाय सम्बन्ध से वर्तमान रहता हुआ जो कारण है वह असमवायिकारण है। **जैसे-** 'तन्तुओं का संयोग पट का असमवायिकारण है और तन्तुरुप पटरुप का असमवायिकारण है' ।

8209837844

www.ugc-net.com

1. कार्य के अधिकरण में समवाय सम्बन्ध से रहता हुआ कार्य प्रति असमवायिकारण-

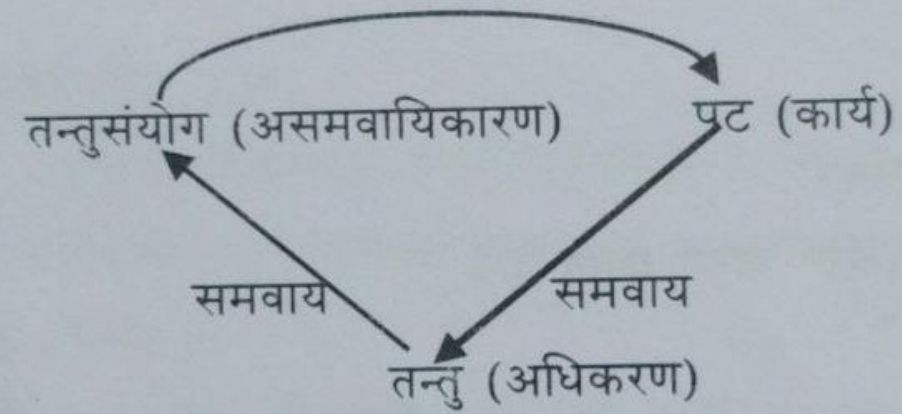

2. कार्य के समवायिकारण के अधिकरण में समवाय सम्बन्ध से रहता हुआ कार्य के प्रति असमवायिकारण-

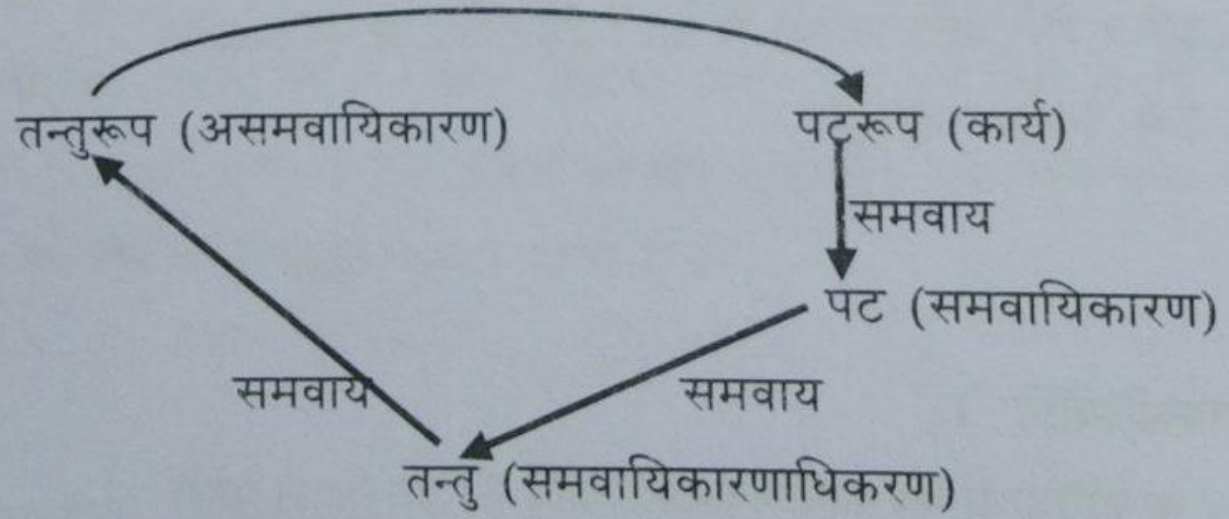

8209837844 www.ugc-net.com

3. निमित्तकारणम्-

'तदुभयभिन्नं कारणं निमित्तकारणम्' । **यथा-** तुरीवेमादिकं पटस्य ।

अर्थ- समवायिकारण और असमवायिकारण इन दोनों से जो भिन्न कारण है उसे निमित्त कारण कहते है । **जैसे-** कपडे बनाने में सहायक यन्त्र तुरी, वेमा आदि।

8209837844 www.ugc-net.com

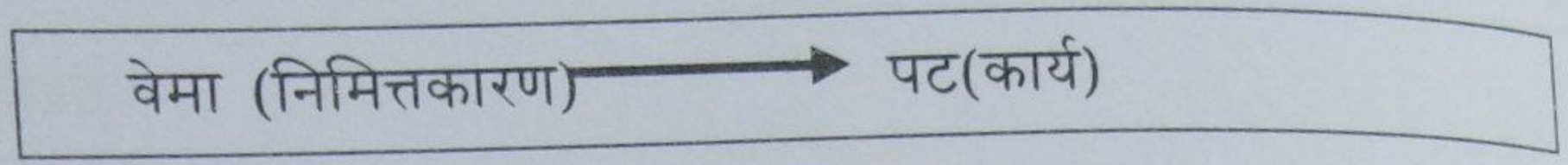

करणम्-

'तदेतत्त्रिविधकारणमध्ये यदसाधारणं कारणं तदेव करणम्' ॥

अर्थ- समवायिकारण- असमवायिकारण और निमित्तकारण इन तीनों कारणों में जो 'असाधारणकारण' है उसे 'करण' कहते है।

Next Topic....

।। प्रत्यक्षखण्ड ।।

Home work Question....

3. तर्कसङ्ग्रहानुसारं' कति गुणाः सन्ति -

(A) सप्तदश (B) अष्टचत्वारिंशत्

(C) चतुर्विंशतिः (D) दश

4. उत्क्षेपणं' कस्य प्रकारः -

(A) गमनस्य (B) भ्रमणस्य

(C) कर्मणः (D) करणस्य

FEEDBACK

- आपको ये क्लास कैसा लगा ??

📝Comment box में अपना comment कर के Next Class में आपका solution पाए 📑 📝

For More Information....

www.ugc-net.com

/Fillerform

/Fillerform

/Fillerform

info@fillerform.com

8209837844

THANK YOU